OUR PUBLICATIONS

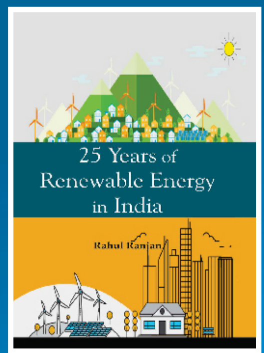

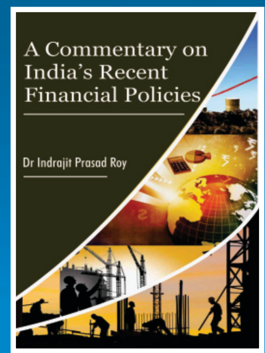

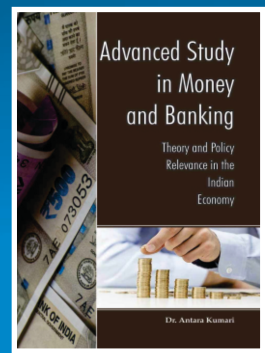

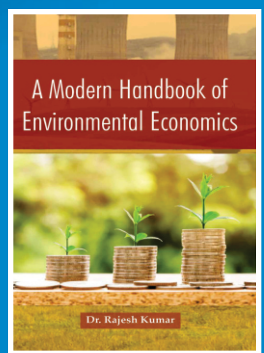

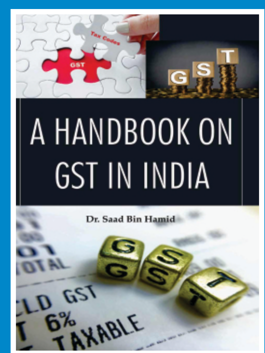

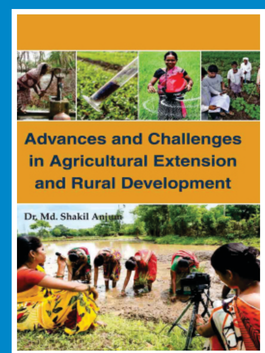

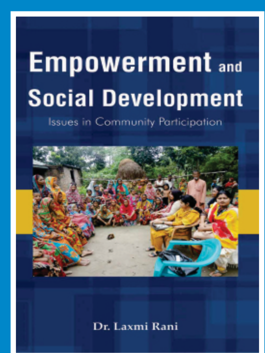

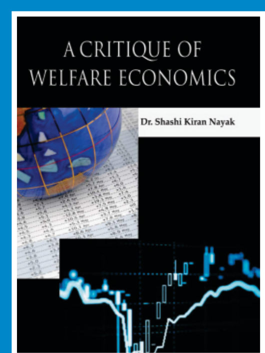

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 11 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2019 मूल्य ₹1500

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed
Hindi Language Journal

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
रीडर, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन
WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

वर्ष : 11 **अंक :** 6 ❑ नवम्बर-दिसम्बर, 2019

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

प्रो. लॉरेंस ओएडिजी
वेगेनिंग्न विश्वविद्यालय, नीदरलैंड
डॉ. मार्टिन ग्रिन्डले
नॉटिंग्म विश्वविद्यालय, लंदन
डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरवोरोग, ओन्टारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. सुरज नन्दन प्रसाद
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. सी.पी. शर्मा
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

संपादकीय सम्पर्कः
448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916
e-mail : editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

मूल्यः ₹ 1500.00

मुद्रक एवं प्रकाशक निर्मल कुमार सिंह द्वारा WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045 से प्रकाशित तथा ट्राइडेंट इन्टरप्राइजेज, डी-204, सेक्टर-10, नोएडा, जी.बी. नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित

नोटः पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

लघु उद्योग के लिए अनुकूल परिवेश को प्रोत्साहन

भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु उद्यमों का सदैव एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चाहे वह उत्पादन, रोजगार या निर्यात, किसी भी रूप में जुड़ा क्यों न हो। इसके अतिरिक्त लघु उद्योग समानता और विकेंद्रीकरण के साथ विकास के भी वाहक हैं। इसलिए आर्थिक नीति को लघु उद्योगों के संवर्धन और संरक्षण पर उचित रूप से लक्ष्य किया जाना चाहिए। हालांकि दो दशकों से अधिक समय से यह क्षेत्र एक गंभीर संकट से गुजर रहा है। बड़ी संख्या में लघु उद्योगों की समाप्ति न केवल नौकरियों के सृजन, बल्कि उनके एवं अर्थव्यवस्था के विकास में अवरोध उत्पन्न कर रही है।

उदारीकरण और भूमंडलीकरण का प्रभाव: स्वतंत्रता के बाद देश की औद्योगिक नीति ने बड़े पैमाने पर निजी उद्योगों के विकास पर रोक लगाई। उस दौर की औद्योगिक नीति लाइसेंस और कोटा राज पर्याय बन गयी थी। मौजूदा उद्योगों ने तो इस आर्थिक नीति के दौर में अपना अस्तित्व बरकरार रखने के कला सीख ली, लेकिन नए उद्यमियों के लिए पनपना कठिन रहा।

जहां तक लघु उद्योगों का संबंध है, तत्कालीन नीति ने एसएसआई को उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में काम करने की अनुमति दी और कई वस्तुओं को एसएसआई के लिए आरक्षित कर दिया गया। 1991 में नई आर्थिक नीतियों के पदार्पण से पूर्व 812 वस्तुओं के उत्पादन की जिम्मेदारी केवल लघु उद्योगों की थी। नई आर्थिक नीति (एनईपी) ने आरक्षण की इस नीति को कुचल दिया। इसी प्रकार लघु उद्योगों को सरकारी खरीद में वरीयता दी जाती थी, कीमतों और खरीद, दोनों के मामले में। धीरे–धीरे प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के नाम पर एसएसआई के लिए रियायतें समाप्त कर दी गयीं। यह कहा गया कि एसएसआई को आरक्षण देने से प्रौद्योगिकी का विकास बाधित होता है और प्रतियोगिता की भावना दम तोड़ देती है। यह भी कहा गया कि संरक्षण देने से अक्षमताएं उत्पन्न होती हैं और देश अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर पाता है। यह तर्क दिया गया कि अगर हम लघु उद्योगों सहित घरेलू उद्योग को संरक्षण देना जारी रखेंगे तो विदेशी निवेशकों को निराश करेंगे। साथ ही उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प प्राप्त करने का मौका नहीं मिलेगा। एनईपी के तर्कों ने रोजगार, विकेन्द्रीकरण और ऐसी समानता की वकालत करने वाले पक्ष पर विजय हासिल कर ली, जो एसएसआई को रियायत देने की बात करती थी। भूमंडलीकरण के युग में मुक्त आयात नीति ने हमें बड़ी संख्या में उत्पाद और कदाचित प्रौद्योगिकी हासिल करने में तो मदद की, लेकिन लाखों छोटे उद्यमों की तालाबंदी की कीमत पर, जो विश्व के दूसरे देशों से भयंकर प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर सके। हालांकि ऑटोमोबाइल जैसे कुछ क्षेत्रों में सहायक लघु स्तरीय इकाइयों में कुछ वृद्धि देखी गयी लेकिन सामान्य रूप से लघु उद्योगों पर बहुत बुरा असर हुआ, खासतौर से चीन से होने वाले आयात के कारण। खिलौने, बिजली के उपकरण, मोबाइल, कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स उपसाधनों, प्रोजेक्ट माल, बिजली संयंत्रों आदि के भारी आयात के कारण देश पर विदेशी मुद्रा भुगतान का भारी बोझ आया, साथ ही हमारे उद्योग और व्यापार नष्ट हो गए जिससे बड़े पैमाने पर बेरोजगारी हुई।

मेक इन इंडिया को कैसे बढ़ावा दें: यद्यपि, चीन द्वारा डंपिंग और भारत के लघु उद्योगों पर उसके असर के विषय में कोई संदेह नहीं है, फिर भी यह समझना महत्वपूर्ण है कि चीनी सरकार अपने देश में उद्योग और उद्यमिता के विकास के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करती है। इसी कारण चीन विश्व का विनिर्माण केंद्र बन गया है। भारत में ऐसी कई समस्याएं हैं जिनके कारण लघु उद्योगों का विकास प्रभावित होता है। इनमें महंगी बिजली, पुराना श्रम कानून, जटिल कर प्रणाली, करों की उच्चदर, वित्त पोषण की समस्याएं, बुनियादी ढांचे की कमियां, उद्यम लगाने को हतोत्साहित करने वाले कानून, इंस्पेक्टर राज और विकृत पर्यावरण कानून शामिल हैं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि लघु उद्योगों को न केवल आयात संबंधी प्रतिस्पर्धा झेलनी पड़ती है, बल्कि उद्योग शुरू करने से लेकर अंतिम उत्पाद को मार्किट तक पहुंचाने में भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अलग श्रम कानूनों की जरूरत: श्रम की सुरक्षा और कल्याण के महत्व से कोई इंकार नहीं करता। हालांकि अनुचित तरीके से काम पर रखने और निकालने की नीति अच्छी नहीं है और हमें श्रमिकों के हितों की रक्षा करनी चाहिए लेकिन बड़े और लघु उद्यमों के लिए एक ही कानून का औचित्य नहीं है। परिदृश्य अब बदल गया है और जटिल श्रम कानूनों के कारण लघु उद्यमों ने नियमित श्रमिकों की भर्ती के बजाय अनुबंध पर कामगारों को रखना शुरू कर दिया है। बिचौलियों द्वारा ठेके पर काम करने वालों का शोषण किया जाता है जिससे उद्यमियों एवं श्रमिकों के बीच का संबंध समाप्त होता है और दोनों, उद्यमियों और श्रमिकों का नुकसान होता है। इस समस्या को देखते हुए, दूसरे श्रम आयोग ने लघु उद्यमों के लिए अलग कानून बनाने की सिफारिश की थी। श्रमिक संगठनों ने भी ऐसी पहल का समर्थन किया था। कुछ समय पहले अति लघु, लघु एवं मध्यम उद्योग विधेयक तैयार किया गया था। हालांकि लघु उद्यमों के लिए अलग श्रम कानूनों की अब भी आवश्यकता है। वित्त बैंक और अन्य वित्तीय संस्थानों का मानना है कि लघु उद्यमों को उधार देना जोखिम भरा काम है। इस सोच में कोई सच्चाई नहीं है। खासकर यह देखते हुए बड़े कर्ज के बदले बैंक एनपीए जैसे जबरदस्त संकट का सामना कर रहे हैं। इस पूर्वव्यापी धारणाओं के कारण बैंक लघु उद्यमों को

ऋण देने से बचते हैं, इसके बावजूद यह उनके लिए कानूनी बाध्यता है कि वे लघु उद्यमों को ऋण में वरीयता दिखाएं। इसके अतिरिक्त लघु उद्यमों को उच्च ब्याज दरों पर ऋण लेना पड़ता है, जबकि बड़े उद्यमों को बिना परेशानी के, बहुत सस्ती दरों पर ऋण मिलता है और वह भी आसान शर्तो पर। वर्तमान सरकार ने माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रीफाइनांस एजेंसी (मुद्रा) स्टार्ट अप स्कीम इत्यादि के माध्यम से लघु और अति लघु उद्यमों का मार्ग सुगम बनाने का प्रयास किया है। अब केवल मुद्रा योजना के अंतर्गत 3.9 लाख करोड़ रुपये का कुल ऋण संवितरित किया गया है। इसके बाद मुद्रा ऋण के 9.3 करोड़ लाभार्थियों ने न केवल खुद स्वरोजगार चालू किया है बल्कि रोजगार सृजन भी किया है।

भारी आयात और डंपिंग पर प्रतिबंध: हालांकि, विदेशी व्यापार आधुनिक काल में एक सामान्य घटना है लेकिन यह लघु उद्योगों के लिए संकट का बायस है। इसका कारण कुछ विदेशी देशों, विशेष रूप से चीन द्वारा की जाने वाली डंपिंग है। केंद्र सरकार ने अब बड़े पैमाने पर एंटी डंपिंग शुल्क लगाया है। राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में, तत्कालीन वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने कहा था कि चीन से आयात किए गए 93 उत्पादों पर एंटी डंपिंग शुल्क लागू है। इसके अतिरिक्त एंटी डंपिंग एंड एलीइड ड्यूटी के महानिदेशालय ने चीन से आयात के 40 मामलों में पहल की है। वर्ष 2016-17 में कुछ वस्तुओं पर एंटी डंपिंग शुल्क लगाने के वांछनीय परिणाम मिले। चूंकि चीन की अनेक वस्तुओं पर एंटी डंपिंग शुल्क लगाया जा रहा है इसलिए यह उम्मीद की जा रही है कि चालू वर्ष में चीन से आयात में गिरावट होगी। इससे न केवल घरेलू उद्योग को राहत मिलेगी, बल्कि चीन के साथ व्यापार घाटा भी कम होने की संभावना है।

सरकारी खरीद में वरीयता: लघु उद्यमों को संरक्षण और बढ़ावा देने के लिए ऐसी व्यापक और स्पष्ट सरकारी नीति थी कि एसएसआई से खरीद को वरीयता दी जाएगी। लेकिन बदलते दौर में यह वरीयता समाप्त या कम कर दी गई। हाल ही में सरकार ने जनरल फाइनांशियल नियम (जीएफआर) बनाकर एक नई खरीद नीति लागू की है। जीएफआर के नियम 153 में कहा गया है: ''50 लाख रुपये और उससे कम मूल्य के माल की खरीद में, और जहां नोडल मंत्रालय यह निर्धारित करता है कि पर्याप्त स्थानीय क्षमता और स्थानीय प्रतियोगिता है, केवल स्थानीय आपूर्तिकर्ता ही पात्र होंगे। 50 लाख रुपये और उससे अधिक मूल्य की खरीद के लिए (या जहां अपर्याप्त स्थानीय क्षमता/प्रतियोगिता है)। यदि न्यूनतम बोली गैर-स्थानीय आपूर्तिकर्ता की नहीं है, तो निम्नतम लागत वाले स्थानीय आपूर्तिकर्ता, जो न्यूनतम बोली के 20 प्रतिशत के अंतर के भीतर है, को निम्नतम बोली से मेल खाने का अवसर दिया जाएगा।'' उम्मीद की जाती है कि घरेलू माल की खरीद को वरीयता देने से घरेलू उद्योग को सामान्य रूप से और लघु स्तरीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिलेगा।

इंस्पेक्टर राज की समाप्ति: एसएसआई पर 40 से अधिक कानून लागू हैं और 50 से ज्यादा निरीक्षक उनके कारखानों का दौरा करते हैं। उनमें से कई में एसएसआई को दंडित करने के लिए व्यापक शक्तियां हैं। इन खतरों के साथ एसएसआई के लिए उत्पादन, विपणन और प्रौद्योगिकी के उन्नयन जैसे मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल होता है। कई ऐसे कानून हैं जो आधुनिक समय में उपयोगिता खो चुके हैं और कई सामान्य रूप से अर्थव्यवस्था और विशेषरूप से उद्योग के स्वस्थ कामकाज में बाधक हैं। इस त्रासदी को समाप्त करने की सख्त आवश्यकता है। हालांकि अर्थव्यवस्था के सुचारू रूप से कार्य करने के लिए वर्ततमान सरकार ने कुछ बेमानी कानूनों को निरस्त करने का काम शुरू कर दिया है। अब तक 1200 अधिनियम रद्द किए गए हैं और 1824 अधिनियमों को निरस्त करने के लिए चिन्हित कर लिया गया है। नए उद्यमियों की सुविधा हेतु सभी प्रकार की मंजूरी के लिए एकल खिडकी की आवश्यकता है। कुछ राज्यों ने इस प्रक्रिया को शुरू किया है। जैसे ही अधिक से अधिक राज्य सरकारें ऑनलाइन होंगी, इस प्रक्रिया में तेजी आएगी। स्टार्टअप्स के लिए नई पहल के तहत, ऑनलाइन अनुमतियां पहले ही दी जा चुकी हैं।

बुनियादी ढांचे का निर्माण: एक दुर्गम क्षेत्र में लघु उद्यमों को शुरू करना और चलाना लगभग असंभव है। वे न तो रेल या सडक से जुड़े हैं, न ही वहां ऊर्जा का विश्वसनीय स्रोत है। बड़े और विकसित स्थानों में भी बिजली की आपूर्ति एक बड़ा मुद्दा है। कई स्थानों पर बड़े पैमाने पर जनरेटर का उपयोग किया जाता है। इससे लागत बढ़ती है और प्रदूषण भी होता है। जनरेटर वाली इकाईयों का संबंधित विभागों के निरीक्षकों द्वारा शोषण भी किया जाता है। हमें रेल, सडक, बिजली, कौशल विकास, बाजार (ई-पोर्टल्स सहित) सहित विभिन्न प्रकार के बुनियादी ढांचे को विकसित करने की जरूरत है। गांवों का सार्वभौमिक विद्युतीकरण, सौर ऊर्जा को बढ़ावा, वर्तमान सरकार द्वारा सडकों का तेजी से निर्माण, यह सब लघु और अति लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए ही किया जा रहा है, खासतौर से ग्रामीण इलाकों में। सरकार द्वारा ई-प्रोक्योरमेंट को भी शुरू किया गया है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वभाव से भारतीय लोग उद्यमी, मेहनती और उत्साही हैं। उन्हें उद्यमिता विकास के लिए अनुकूल वातावरण की आवश्यकता है। यह प्रमुख रूप से सरकार का काम है। सरकार को अच्छे कानून बनाने पड़ते हैं, वातावरण को अनुकूल बनाना पड़ता है। भौतिक अवसंरचना को छोड़कर इसके लिए बहुत ज्यादा बजट की आवश्यकता नहीं होती है। बुनियादी ढांचे को भी सार्वजनिक निजी साझेदारी से विकसित किया जा सकता है। हाल के वर्षो में सुधार के बावजूद व्यापार में सहजता के मामले में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी रैंकिंग अब भी 130 है। सरकार द्वारा बहुत कुछ किया जा चुका है और अभी बहुत अधिक की उम्मीद है।

संपादक

इस अंक में

सामाजिक न्याय की परिधि में निम्न पिछड़ी जातियों की स्थिति–आले नवी 1

हड़प्पा कालीन प्रमुख नगर: एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० मो० मंजर अली 7

राजनीतिक यथार्थवाद और व्यवहारवाद–डॉ० आलोक कुमार 13

भारत-नेपाल सम्बन्ध तथा नरेन्द्र मोदी सरकार की वैदेशिक नीति व कूटनीति: एक अध्ययन–डॉ० अमिताभ त्रिवेदी 17

नारी सशक्तिकरण और महात्मा गाँधी–अनिल शर्मा 22

भारत में लोक सभा: पृष्ठभूमि, संरचना और कार्य–आशुतोष सिंह जेलियाँग 27

संसद तथा राज्य विधानमंडल के द्वितीय सदनों का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० अशोक कुमार 33

प्रेमचंद की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना–डॉ० शैल कुमारी वर्मा 40

भारतीय दर्शन में प्राकृतिक और दार्शनिक शिक्षा के आधार–डॉ० उदय कुमार शर्मा 44

जैन दर्शन में आचार मीमांसीय अनुशीलन–डॉ० राकेश कुमार 49

विश्व स्वास्थ्य संगठन की संरचना एवं कार्य: एक सामान्य अवलोकन–डॉ० कुमारी सुनीता 55

दिनकर की कविता: मार्क्सवाद तथा गांधीवाद का द्वंद–डॉ० संजय कुमार सिंह 59

बिहार के कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक समस्याएँ: शिक्षण सेवा के सदर्भ में–डॉ० स्नेह लता 67

दक्षिण और उत्तर बिहार की प्रादेशिक विषमताएँ: तुलनात्मक और भौगोलिक विश्लेषण–डॉ० राघवेन्द्र प्रसाद सिन्हा 72

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के सामाजिक पृथक्करण एवं उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन–अजय कुमार यादव; डॉ० आशाराम 76

चिड़ावा तहसील में सिंचित क्षेत्र के स्थानिक वितरण का अध्ययन–डॉ० संजीव कुमार; डॉ० अश्वनी आर्य 82

समकालीन कहानियों में राजनीतिक चेतना–डॉ० विनय कुमार 89

सामाजिक नियंत्रण: अर्थ, प्रकार और प्रतिकूल प्रभाव–डॉ० राम बिनोद 92

भारत में अंतर्राष्ट्रीय चेतना का विकास–डॉ० राज भूषण उपाध्याय 97

शहरी जीवन की गुणवत्ता विशेषत: पटना के सन्दर्भ में–डॉ० विजय मिस्त्री 101

बौद्ध साहित्य में बुद्ध कालीन समाज–डॉ० शिवजी सिंह 106

पंचायत: भारतीय शिक्षा संस्कृति की संवाहक और सभ्यता का अंग–डॉ० सुमन्त कुमार 110

इतिहास का पारस स्पर्श: चंपारण का गांधी–डॉ० गुड्डी कुमारी 117

18वीं और 19वीं शताब्दी में भारत में नारी जागरण के प्रयास–डॉ० पूर्णिमा कुमारी 121
नवादा जिला में पर्यटन की संभावनाएँ: एक भौगोलिक विश्लेषण–अमर कुमार 127
बिहार के हाईस्कूल के छात्रों के व्यक्तित्व की उनके लिंग के संबंध में गतिशीलता: एक तुलना–अदनान अहमद 135
आधुनिक समय में एकल परिवार की बढ़ती प्रवृति के कारण का अध्ययन–डॉ० अरूणा कुमारी 138
स्त्री आंदोलन और प्रेमचंद–डॉ० बिंधी कुमारी 141
स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की महिलाएँ–डॉ० बिपिन कुमार 145
भीष्म साहनी के साहित्य में नारी-चेतना : राष्ट्रीय पक्ष–मनकी रानी; डॉ० निरुपमा हर्षवर्धन 148
स्वतंत्रता आंदोलन में सूरज नारायण सिंह का योगदान–डॉ० मनोरंजन कुमार 153
बिहार में नील उद्योग एवं चम्पारण सत्याग्रह–डॉ० अमरजी कुमार 157
वैश्वीकरण के युग में मजदूर और किसान–डॉ० राकेश कुमार पासवान 162
मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था–डॉ० संजय कुमार आजाद 166
हिन्दू पुनरूत्थानवाद की पृष्टभूमि में राष्ट्रीय जागरण (उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी)–डॉ० चन्दन कुमार 171
मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में कार्ल मार्क्स का विचार–डॉ० महेन्द्र पासवान 177
लैंगिक असमानता: समस्या एवं समाधान (संवैधानिक, वैधानिक एवं अन्य प्रयास)–राखी प्रजापत 183
भारतीय राजनीति में दलीय व्यवस्था का विकास–डॉ० मो० जोहा सिद्दीकी 196
रामकृष्ण मिशन के सामाजिक एवं धार्मिक संदर्भ–डॉ० रिंकु कुमारी 201
जननायक कर्पूरी ठाकुर: एक परिचय–डॉ० सुनीत कुमार 207
औद्योगिक नगरीय संरचना एवं बिहार के जनजातीय समुदाय: एक अध्ययन–डॉ० प्रियंका कुमारी 211
भारतीय राजनीति में मतदान व्यवहार: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अवधेश कुमार सिंह 215
बिहार प्रांत का निर्माण एवं नवीन सामाजिक-राजनीतिक शक्ति-संतुलन–डॉ० बिजेन्द्र कुमार सिंह 219
भारत और नेपाल का सम्बन्ध एवं मधेशी समस्या का अवलोकन–संध्या कुमारी 225
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और राष्ट्रवाद: एक अध्ययन–डॉ० पंकज कुमार राय; प्रीति रानी 228
भारत में सांप्रदायिक राजनीति बनाम सेकुलरवाद का विमर्श: एक अवलोकन–अमृता कुमारी 233
गरीब महिलाएँ: लघु आवश्यकता, लघु ऋण एवं कुटीर उद्योग–डॉ० मणि भूषण कुमार 236
आरक्षण नीति की उपलब्धियाँ और परिणाम–विकास कुमार 241
पंडित दीन दयाल का एकात्ममानवतावाद: एक दार्शनिक विवेचन–डॉ० शैलेन्द्र कुमार 245
बिहार में क्षेत्रीय विकास: (स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण)–अल्पना कुमारी 248
भारतीय राजनीति में दबाव समूह की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–वीभेष आनंद 255

बिहार में प्रथम कांग्रेसी मंत्रिमंडल (1937-38) का ऐतिहासिक विश्लेषण–डॉ० अमित कुमार 258

राजा राममोहन राय के धार्मिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन–डॉ० अरुण कुमार पंडित 263

डॉ० राम मनोहर लोहिया के आर्थिक चिंतन का विवेचन–डॉ० रणधीर कुमार राणा 267

सोशल मीडिया, शिक्षा, रोजगार एंव राजनीति–वर्षा रानी 271

लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान, कल्याणकारी योजना–डॉ० रिंकी कुमारी 275

भारतीय संविधान में स्वतंत्रता के अधिकार: वाद एवं विवाद–सुमित कुमार सिंह 280

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जैव- विविधता एवं पशुधन क्षेत्र की भूमिका एवं रोजगार के अवसर–मुकेश कुमार 287

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में दरभंगा के किसानों का योगदान–डॉ० पुष्पा कुमारी 291

राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार के दरभंगा जिला में महात्मा गाँधी की यात्राएँ: एक अध्ययन–मो० जमील हसन अंसारी 295

दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल और बिहार–सुमित कुमार 301

भारतीय संस्कृत साहित्य में मानवाधिकार का इतिहास–डॉ० विकास कुमार 305

भारतीय राजनीति एवं कश्मीर मुद्दा: अनुच्छेद 370 के सन्दर्भ में–अमोद कुमार दास 309

बिहार में चम्पारण आन्दोलन: एक समीक्षात्मक अध्ययन–नीरज कुमार 316

भारतीय लोकतंत्र एवं दबाब समूह: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० प्रमोद कुमार राम 321

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी में कम्प्यूटर का आर्थिक सन्दर्भ–प्रोफेसर (डॉ.) संजय कुमार झा 326

गृह विज्ञान को लेकर लोगों के भ्रम की स्थिति–श्रीमती संगीतापुरी 330

नई कहानी: संवेदना और शिल्प–डॉ० विनय कुमार 334

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध: संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चे के लिए प्रयास–डॉ० दीपक कुमार 337

आधुनिक समय में अस्थानिक गर्भावस्था - बढ़ती समस्या: एक अध्ययन–अर्पणा सिन्हा 342

भारत में ई - कामर्स की वर्तमान स्थिति–स्वाति शर्मा; डॉ० एस. आर. ठाकुर 346

आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास (1757-1964)–डॉ० रवि शंकर 350

प्राचीन भारत के शिल्पी एवं व्यावसायिक जीवन में पशुओं का महत्त्व–डॉ० केशव कुमार रंजन 353

लघुवित्त के माध्यम से निर्धनतम् तक पहुँच एवं प्रभाव–डॉ० श्वेता 358

परिवार कल्याण कार्यक्रम: पद्धति और मूल्यांकन–डॉ० शंकर पंडित 363

उत्तर बिहार में मखाना खेती की समस्याएं और संभावनाएँ–डॉ० राजेश कुमार सुमन 367

डॉ० राधाकृष्ण सहाय का नाट्य चिंतन और समाज–डॉ० चंदन कुमार 374

कविता विधामे वैधनाथ मिश्र' यात्रीक योगदान–प्रीति कुमारी 380

सार्क और भारत–शिप्रा भारती 383

भारत-रूस संबध: सामरिक संबंधो का 21वीं शताब्दी के संदर्भ में एक अध्ययन–डॉ० रणबीर गुलिया; अमित कुमार 388

छत्तीसगढ़ में लघुवनोपज संग्रहण एवम् सरगुजा जिले के वनोपज संग्राहक श्रमिकों का
ऐतिहासिक विश्लेषण–डॉ० घनश्याम दुबे; अभिषेक अग्रवाल 393

गुप्तोत्तर काल के पश्चात् शूद्रों की स्थिति : एक अध्ययन–मुकेश कुमार पासवान 399

मुजफ्फरपुर जनपद की बस्ती के स्थानिक वितरण में स्त्री/पुरुष साक्षरता का विवेचनात्मक अध्ययन–सुनील कुमार 403

रोहतास जिला में पत्थर उद्योग का पर्यावरण पर प्रभाव: एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० शैलेन्द्र कुमार सिंह 407

प्राचीन भारतीय इतिहास के साहित्यिक साधन–डॉ० रिंकु कुमारी 411

वैदिक कालीन महिलाओं की स्थिति एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता–प्रज्ञा शिखा 417

महिलाओं के विरुद्ध अपराध एवं मानव अधिकार: एक समाजशास्त्रीय समीक्षा–डॉ० मोनी कुमारी 422

आधुनिक भारत एवं महिला राजनीति–डॉ० निखिल कुमार 427

वर्त्तमान समय में लोहिया दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० चन्दा कुमारी 429

आधुनिक युवाओं एवं बच्चों पर मीडिया का प्रभाव–ईश्वर प्रसाद यदु; तेजराम नायक; डॉ० राकेश कुमार डेविड 434

बिहार की महिलाओं का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान–डॉ० अर्चना कुमारी 439

परिवार के लिए उचित व पौष्टिक पोषण–डॉ० मंजू श्री 443

मध्यकालीन भारत के संदर्भ में जनसम्पर्क की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: एक अध्ययन–डॉ० उपेन्द्र कुमार 446

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं के कृत्य संतोष एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति का
तुलनात्मक अध्ययन–योगेश कुमार पाल; डॉ० राजेश पालीवाल 454

जैनेन्द्र कुमार और भबेन्द्र नाथ शइकीया की बाल मनोविज्ञान की कहानियाँ: एक अवलोकन
–डॉ० रीतामणि वैश्य; जयश्री काकति 460

नागार्जुन की कविता में जनपक्षधरता–डॉ० उमा देवी 467

भवभूति की नाटयकला तथा शैलीगत वैशिष्टय: एक अनुशीलन–प्रो. प्रसून दत्त सिंह 472

भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति–डॉ० कुमारी पूजा 477

'यात्री'क चित्रामे प्रगतिवादी स्वर–गोपाल कुमार 482

राजभाषा के रूप में हिन्दी: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० प्रीति बैश्य 486

भारत में लैंगिक असमानता और कुपोषण–सुकन्या; डॉ० अंजु सिंह 491

आधुनिक लोकतंत्र में असहमति का महत्त्व–प्रतिमा सिंह 495

अरुण कमल की कविताओं में शिल्प-विधान–सत्यनारायण कुमार 499

डिजिटल कला का मनोवैज्ञानिक प्रभाव–डॉ० संगीता कुमारी 507

हिंदी साहित्य पर महात्मा गांधी का प्रभाव–डॉ० अनीता	513
राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2019 का प्रारूप: समग्र विश्लेषण–अनुराग तिवारी	515
पेरिस शांति सम्मेलन का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर प्रभाव–डॉ० सुरेन्द्र कुमार सिंह	522
भारत में आर्थिक नियोजन एवं संघवाद पर उसका प्रभाव–डॉ० अनामिका ब्रजवंशी	526
भारत में वामपंथी आंदोलन एवं उनसे संबंधित प्रमुख घटनाएं–डॉ० अनंता कुमारी	532
चंपारण सत्याग्रह: भारत छोड़ो आंदोलन की पूर्वपीठिका द्वारा–डॉ० अरुण कुमार निराला	536
बिहार में सामाजिक आंदोलन: पृष्ठभूमि एवं परिप्रेक्ष्य द्वारा–डॉ० बिजेन्द्र कुमार सिंह	540
आधुनिक भारतीय इतिहास के संभावित स्रोत के रूप में वैज्ञानिक उपादान: एक अवलोकन–दिलीप कुमार	544
आधुनिक भारत में जातिवाद की पृष्ठभूमि: एक अध्ययन–डॉ० प्रज्ञा कुमारी	547
प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं शैक्षिक प्रकल्प–डॉ० संतोष कुमार	552
भारत में वैज्ञानिक विकास की ऐतिहासिक परम्परा: एक अध्ययन–डॉ० वेदवती	556
दलित एवं पिछड़ी जाति के किशोरों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन–डॉ० धनवीर प्रसाद	561
बिहार के निर्माण में महेश नारायण का योगदान–डॉ० हरिशंकार राय	565
भारतीय संस्कृति पर भूमंडलीकरण का प्रभाव–डॉ० पूर्णिमा आर	569
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का युवाओं पर प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–प्रीती मौर्या	573
आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान: अमरपुर प्रखण्ड (बांका जिला) के विशेष संदर्भ में–अनुज कुमार	578
बौद्ध धर्म में नारी की स्थिति–कल्याणी कुमारी	583
कालिदास कृत मेघदूतम् में मेघ-यात्रा–विपुल कुमार	588
इतिहास एक विज्ञान है अथवा कला–चंचला कुमारी	592
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन–देवेन्द्र प्रताप सिंह	598
भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओ की शिक्षा–डॉ० बबीता कुमारी	604
आधुनिक भारत में सांप्रदायिकता को प्रभावित करने वाले तत्वों का ऐतिहासिक विश्लेषण–मो० इंतखाब हसन	609
गाँधी जी का ग्राम-स्वराज: एक अध्ययन–डॉ० रंजीत पासवान	613
गुप्तकालीन सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन–डॉ० सरिता कुमारी	618
आधुनिक बिहार के जनजातीय विद्रोह की स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका–श्याम मूर्ति भारती	624
बागवानी कृषि का विकास: बून्दी जिले का एक अध्ययन–डॉ० नंदकिशोर जेतवाल	629
माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० रतन कुमार भारद्वाज; प्रभुदयाल	634

सारण जिले में जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या वितरण का प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० पिंकी कुमारी 639

चम्पारण क्षेत्र में अनुसूचित जाति/जनजाति का आर्थिक क्रियाकलाप : एक भौगोलिक विश्लेषण–अम्बरीष कुमार 650

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और उनका जीवन-दर्शन–डॉ० आमोद कुमार 656

क्रांतिकारी आंतकवादी आन्दोलन: एक सर्वेक्षण–अरविन्द कुमार सिंह 658

आचार्य नरेन्द्र देव का सामाजिक, आर्थिक एवं दार्शनिक चिंतन–डॉ० रवीन्द्र कुमार राय 663

भारत में नक्सवादी आन्दोलन: एक विश्लेषण–डॉ० कलानंद मंडल 667

ऑनलाइन स्टडी और आज का परिवेश–जनमेजय मिश्र; कृष्ण कुमार पाण्डेय 671

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन
–दीपक कुमार चौबे; डॉ० पार्वती यादव 676

मनोभाषाविज्ञान: अवधारणा एवं स्वरूप–डॉ० वंदना शर्मा; डॉ० गोविंद सिंह 680

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में वैवाहिक जीवन की अभिव्यक्ति–डॉ० उमेश कुमार शर्मा 683

भारत में राज्यपालों की भूमिका (1967 ई. के बाद)–डॉ० गुंजन कुमार 688

20वीं शताब्दी में बिहार के किसानों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति: एक अध्ययन–मो० शाहनवाज आलम 692

स्वतंत्र भारत में महिला आंदोलन का स्वरूप: एक अध्ययन–मृदुला कुमारी 696

काशी नगरी का गौरव देववाणी संस्कृत की आधुनिक परिप्रेक्ष्य एवं उच्च शिक्षा में उपयोगिता–कृष्ण कुमार पाण्डेय 701

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की ई-शासन सेवाओं का अध्ययन–प्रदीप 705

समकालीन कविता में स्त्री-संवेदना का संदर्भ–जैनेन्द्र चौहान 716

धर्म एवं विज्ञान का समन्वय–डॉ० रुचि कुमारी 719

न्याय भाषा-दर्शन में वाक्यार्थ विचार–डॉ० नागेन्द्र तिवारी 723

भारतीय भाषा दर्शन में शब्दार्थ स्वरुप विचार–डॉ० विकास कुमार 727

समकालीन कथा साहित्य में दलित विमर्ष–डॉ० चंदन कुमार 731

सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा : एक अध्ययन–डॉ० अजय कुमार सिंह 733

योगवासिष्ठ में अद्वैतवाद–डॉ० अमृत कौशल 738

बिहार की कृषि का वित्तीय क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ: वरीयता क्षेत्र और बैकिंग क्षेत्र का विशेष अध्ययन
–मृत्युंजय कुमार मिश्र 745

गाँधी के सर्वोदय की अवधारणा में नारी–डॉ० अविनाश कुमार 755

मध्यकालीन मिथिला का सामाजिक जीवन–चंदन कुमारी 761

दिल्ली सल्तनत की स्थापना: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० मो० इन्तेखाब आलम 766

इच्छामृत्यु वरदान या श्राप: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–सिकन्दर अन्सारी 770

नेपाली के गीतों में उनका व्यक्तित्व–डॉ० आर्य सिन्धु 774

1900 ई. से 1976 ई.के बीच उत्तर बिहार में उद्योगों की स्थिति–डॉ० मनोज कुमार 778

मनरेगा एवं ग्रामीण महिलाएं (उत्तराखण्ड के कुमाऊं मंडल के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० निधि राणा 782

नई शिक्षा नीति की आवश्यकताएं–अजीत कुमार सिंह 787

समस्तीपुर जिला में लिंगानुपात का बदलता स्वरुप–नीरज कुमार; डॉ० डी०के० चौधरी 790

सती प्रथा: मुगलकालीन इतिहासकारों का दृष्टिकोण–अनुभा सिंह; डॉ० राजीव नयन 799

मानवेन्द्र नाथ राय के दर्शन में मानव प्रकृति की विवेचना–पूनम कुमारी 801

अलवर रियासत की महिलाओ की भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान–राहुल कुमार मीणा 804

कर्णाटकालीन मिथिला का समाज–डॉ० राकेश कुमार 808

गरीबी उन्मूलन के लिए कार्य-योजना: एक अध्ययन–राकेश कुमार 816

आधुनिक भारत की राजनीति में धर्म का महत्त्व–डॉ० राम विनोद कामत 820

मानवाधिकार और हमारा समाज–डॉ० राम जानकी राय 827

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना–डॉ० लोकपति त्रिपाठी 830

किन्नरों की संस्कृति व् सामाजिक स्थिति का अध्ययन (बिलासपुर जिले के चांटीडीह के विशेष सन्दर्भ में) –पूनम तिवारी; डॉ० ऋचा यादव 838

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में शिक्षक की अपेक्षाएँ–डॉ० राकेश कटारा; सुनिता जांगिड़ 851

कृषि के क्षेत्रीय विकास में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग एवं वैज्ञानिकता–राम रतन मीना 857

नैषधीयचरितम् महाकाव्य में प्रयुक्त कुछ दुर्घट क्रियापदों का विवेचन–धारा 864

भारतीय पत्रकारिता में नैतिकता: एक मूल्यात्मक अध्ययन–डॉ० शशी भुषण कुमार 872

विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व–शालू तिवारी 877

न्याय-वैशेषिक के परमाणुवाद से अन्य परमाणुवादी सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० ओम प्रकाश प्रभाकर 880

राष्ट्रीय निर्माण में महिलाओं की भूमिका–सोनी त्रिपाठी 884

संवैधानिक परिप्रेक्ष्य में मनरेगा की दशा एवं दिशा–डॉ० रेणु कुमारी 888

लघु वनोपज संग्रहण से आदिवासियों के आर्थिक विकास पर प्रभाव (कोरबा वन क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में) –प्रिंस कुमार मिश्रा; प्रो० प्रभाकर पाण्डेय 892

बौद्धकालीन समाज में स्त्री प्रश्न: एक नारीवादी अध्ययन–डॉ० अनामिका कुमारी 899

भ्रूण हत्या-एक समाजिक अभिशाप–अरूण कुमार 903

कृषि फ़सलों में विभिन्न पोषक तत्वों एवं रासायनिक उर्वरकों के प्रभाव–सत्यदेव 910

रतनपुर के प्राचीन धरोहर एवं धार्मिक अंचल का अध्ययन–डॉ० रामरतन साहू; अंजली 916

छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के आर्थिक विकास पर मनरेगा योजना का प्रभाव-एक अध्ययन (दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में)–धरम दास टण्डन; प्रो० प्रभाकर पाण्डेय 921

मीडिया की दुनिया और नागरिक पत्रकारिता–डॉ० मुकेश कुमार मिरोठा 926

हरविजय महाकाव्य में चित्रित सामाजिक मान्यताएँ : एक अध्ययन–डॉ० रेनू शुक्ला 930

शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन–राहुल कुमार तिवारी 944

राजस्थान में अनुसूचित जाति में सामाजिक गतिशीलता: जालोर जिले के मेघवाल समुदाय का अध्ययन –मोहनलाल गेहलोत 949

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के परिवारिक वातावरण का उनके नैतिक मूल्यों में सम्बन्ध का अध्ययन–शालू तिवारी 952

बौद्ध धर्म के इतिहास में "धर्म-चक्र प्रवर्तन"–डॉ० संजय कुमार 957

पर्यावरण एवं संपोषणीय विकास–लक्ष्मी कुमारी 963

अमेरिकी राष्ट्रपति और ब्रिटिश सम्राट तथा प्रधानमंत्री : एक तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० प्रभाकर 967

हिन्दी साहित्य और सिनेमा–डॉ० संतोष कुमार 971

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में पुस्तकालय की भूमिका–डॉ० दिनेश कुमार 976

बिहार में राष्ट्रीय चेतना का विकास और सांप्रदायिक सद्भाव–डॉ० रूमा कुमारी 981

राजनीतिक लामबंदी का दौर एवं सामाजिक परिवर्तन : संदर्भ एवं मुद्दे–अशोक कुमार शर्मा 986

मौर्यकालीन साम्राज्य के सांस्कृतिक आयाम–डॉ० मनीष कुमार 991

नशे की लत: चिकित्सा और थेरेपी के लाभ–डॉ० मनोज कुमार सिंह 995

पर्यावरणीय मनोविज्ञान : पर्यावरण और मानव व्यवहार में अंतर्संबंध–डॉ० सैयद फरहत 999

भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिकता और धर्म–डॉ० राजेश कुमार पांडेय 1002

भारतीय राजनीति: आधुनिकता और परम्परा–प्रियरंजन 1007

संन्यासी विद्रोह–डॉ० विपेंद्र विक्रम 1012

विनोबा भावे की जीवनी व उपलब्धियां–डॉ० सुधीर कुमार सिंह 1014

बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन के जनक राजा नारायण सिंह–डॉ० सुनीता कुमारी 1017

आधुनिक मैथिली साहित्यमे हंसराजक अवदान–कुमकुम कुमारी 1020

ब्रिटिश राज में भारतीय समाचार पत्रों का विकास और भूमिका–कुमारी रीना 1023

साहित्य के प्रसार में अनुवाद की भूमिका–डॉ० स्वाती ठाकुर 1029

शोध-ललित कुमार सिंह नटवर : जीवनी और उनकी कविताओं में होली वर्णन–डॉ० कुमारी मीना सिंह 1032

शोध-ललित कुमार सिंह नटवर: व्यक्तित्व और कविताओं में व्यक्त विचार–डॉ० मनोज कुमार सिंह 1036

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मुजफ्फरपुर जिला में सुनीति देवी की गतिविधियां एवं उनका योगदान–डॉ० अंगुरी बेगम 1042

झारखण्ड में जनजातीय साक्षरता एक भौगोलिक अध्ययन–निरुपमा सुरभि लकड़ा 1049

राष्ट्रभाषा की अवधारणा एवं इस रूप में हिन्दी का प्रश्न : एक अध्ययन–डॉ० सुधीर कुमार 1056

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृष्य–डॉ० कविता राजन 1060

दलित आंदोलन और उसकी चुनौतियाँ–चन्द्रमौली कुमार 1064

पंचायतीराज एवं 73वें संविधान संशोधन : बदलाव की क्रांति का आगाज–डॉ० विकास कुमार 1068

दूसरा सप्तक: एक सामान्य अध्ययन–ध्रुव कुमार शुक्ल 1072

इतिहास की अवधारणा, स्वरूप, विषय क्षेत्र, अध्ययन का महत्व–डॉ० मंजुली कुमारी 1080

भारत में जमींदारी प्रथा का इतिहास–बासुदेव शाह 1082

संस्कृत नाट्य परम्परा में ऐतिहासिक और राजनीतिक नाटक–डॉ० इंदु कुमारी 1086

दिनकर की संस्मरणधर्मी कविताओं का अध्ययन–डॉ० महेश कुमार 1090

महाकवि जयशंकर प्रसाद की कविताओं में प्रतीक योजना–डॉ० उपेन्द्र प्रसाद 1093

स्वतंत्रता काल मे बिहार के राजनितिक विकास में अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका–बिपिन कुमार सिंह 1097

भारत में जनवितरण प्रणाली में कार्यान्वियन तंत्र–मनीष कुमार 1099

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की सफलता का प्रमुख आधार : एक राजनीतिक विश्लेशण –डॉ० रुपक कुमार 1102

आर्थिक विकास: एक आलोचनात्मक विश्लेषण–डॉ० राकेश कुमार 1105

वृद्धावस्था में जरुरी पोषक तत्व और आहार आयोजन–डॉ० प्रज्ञा कुमारी 1110

भवभूति के नाटकों में चित्रित नारी जीवन–डॉ० शोभा रानी सहाय 1115

बिहार में नगर पालिका-कर्मिकी पद्धति : रिविलगंज नगर पालिका का दृष्टातत्मक अध्ययन –डॉ० विद्या भूषण श्रीवास्तव 1118

महावीर चरित : एक काव्य शास्त्रीय समीक्षा–डॉ० अंजलि सहाय 1120

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर समाजवादी विचारों का प्रभाव : "गाँधी, नेहरु, जे.पी., कृपलानी एवं लोहिया के विशेष सन्दर्भ में (1921-1947)–डॉ० अलका सहाय 1123

बिहार के रोहतास जिले का आर्थिक और भौगोलिक अध्ययन–डॉ० मुकेश कुमार 1127
कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व–डॉ० बिमलेश कुमार पाण्डेय 1130
इतिहास के अध्ययन में सहायक विज्ञान का उपयोग–डॉ० पंकज कुमार पांडेय 1133
नालंदा महाविहार से संबद्ध प्राचीन गाँवों की खोज–डॉ० रवि शंकर गुप्ता 1136
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना तथा इतिहास–गिरीश कुमार राय 1143
मौर्यकालीन बिहार में कृषि और कृषि प्रबन्धन का विश्लेषणात्मक अध्ययन
–डॉ० नीता कुमारी; डॉ० रंजीत कुमार राय 1147
नक्सल आन्दोलन: कारण और समाधान–डॉ० गीतांजलि 1153
भारत में शिक्षा का इतिहास–डॉ० मनोज कुमार 1156
मुजफ्फरपुर जिला में महिलाओं की सामाजिक परिस्थिति एवं कामकाजी महिलाओं का उत्पीड़न
–डॉ० रीना कुमारी 1160
गुप्तकाल में नारियों की स्थिति: आर्थिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में–डॉ० रेखा चौधरी 1163
स्वामी विवेकानंद: जाति-पुरोहितवाद से लड़ने वाले क्रांतिकारी–डॉ० संतोष कुमार राय 1168
नादयोग–डॉ० कामेश्वर कुमार 1173
भारतीय संगीत का ऐतिहासिक स्वरूप–डॉ० चन्देश्वर प्रसाद कुशवाहा 1176
शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत में आंतरिक संबंध–डॉ० सुरेन्द्र कुमार राम 1178
संस्कृत साहित्य में तन्त्र साधना–तरूण कुमार 1181
हिंदी साहित्य में लोक जीवन का चित्रण–राकेश कुमार तिवारी 1185
औपनिवेशिक भारत में उभरते राज्य और औद्योगिकरण: एक अध्ययन–डॉ० कल्पना कुमारी 1187
आजादी बाद दलितोद्धार के लिए किये कार्यों का विश्लेषण–डॉ० शैलेन्द्र कुमार सिंह 1191
कोसी-क्षेत्र का बदलता यथार्थ और रेणु की कहानियाँ–डॉ० बेबी कुमारी 1197
भारतीय संघवाद का ऐतिहासिक विश्लेषण–डॉ० सुनील कुमार 1202
प्रेमचंद की गद्य विधाओं में दलित विमर्श–डॉ० अखिलेश कुमार सिंह 1210
बौद्ध-जैन धर्म में पर्यावरण चिंतन–डॉ० कुमारी स्मृति चन्द्र 1215
आरसी प्रसाद सिंह का काव्य सौंदर्य–विवेक चंद्र 1221
दलित समस्या पर गाँधी और अम्बेडकर के बीच मतभेद के बिन्दु–डॉ० नरेन्द्र राज 1225
हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में हिन्दी रंगचेतना का विकास–डॉ० राजगीर साहु 1230
बेनीपुरी के नाटकों की अभिनेयता–डॉ० पूनम कुमारी 1234
भारत छोड़ों आंदोलन एवं बिहार की भूमिका: एक संक्षिप्त अध्ययन–डॉ० संजीव कुमार 1239

बच्चों के शैशवाकालीन सामान्य बीमारियां एवं उसके उपचार–डॉ० अस्मिता सिंह 1243

बिहार में किसान आंदोलन के चरण एवं उसका सांगठनिक प्रतिरूप: एक अध्ययन–रजनीश कुमार 1248

भारत में दक्षिणपंथी राजनीति का उद्‌भव की पृष्ठभूमि एवं प्रभाव: एक अध्ययन–राकेश कुमार रंजन 1252

समकालीन कहानीकारों में भीष्म साहनी–सुशील कुमार मंडल 1257

उदय प्रकाश की कहानियों में नगरीय जीवन–सरस्वती पाण्डेय 1260

विद्यापति-पदावली में चित्रात्मकता–डॉ० शोभा कुमारी 1264

मैत्रेयी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना–डॉ० कुमारी निश्चय 1268

बिहार की राजनीती में पिछड़ा वर्ग–मिन्टु कुमारी 1272

भारत की विदेश नीति और सैन्य संघर्ष–डॉ० सुनील कुमार 1275

पश्चात्य संदर्भ में समाजवाद एवं साम्यवाद की व्याख्या–अंकिता कुमारी 1278

भारत में मानवाधिकार के संवैधानिक प्रावधानों का अध्ययन–दीपक कुमार दास 1282

किसान क्रेडिट कार्ड की कृषि विकास में भूमिका: कमालपुर (गया) के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० मनोज कुमार निराला 1287

ग्रामीण उद्योग: ग्रामीण विकास की एक आवश्यकता–डॉ० कृष्ण कुमार सिंह 1294

जीवन और लेखन : राजेन्द्र यादव–भोला प्रसाद यादव 1298

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की मूल्यों (सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्य) का तुलनात्मक अध्ययन–अजय सिंह यादव; डॉ० आशाराम 1304

कौटिल्यकालीन न्याय प्रणाली: एक अध्ययन–शिव कुमार सिंह 1311

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास : "आपका बंटी" (एक संक्षिप्त विवेचन)–डॉ० मनीषा मिश्रा 1316

भारत की स्वतंत्रता संग्राम में चंपारण सत्याग्रह का महत्व–उषा कुमारी 1318

उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई० पू०) की भौगौलिक व राजनीतिक व्यवस्था–नूतन कुमारी 1320

प्रसाद की ध्रुवस्वामिनी : वर्तमान में भी प्रासंगिक–डॉ० कंचन गुप्ता 1326

बिहार में कृषि सांख्यिकी की उभरती प्रवृतियाँ: बिहार के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन–अमिता चन्दन 1329

नूर मोहम्मद के काव्य पर भारतीय सूफी चिंतन का प्रभाव–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 1334

खादी विकास और ग्रामोद्योग आयोग : ग्रामीण विकास में साझीदार–डॉ० नवीन कुमार 1339

दत्तवती महाकाव्यमे प्रकृति-चित्रण–दीपक कुमार पटेल 1343

जनसंख्या वृद्धि और मानव संसाधन विकास–अर्चना शंकर 1347

गंगा के मैदानों में जनसँख्या के कारकों की आर्थिक संरचना : एक अध्ययन–वंदना शंकर 1349

दृष्टिकोण

हिंदी नवजागरण के आर्थिक सवाल–अशोक कुमार यादव 1351

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ: समीक्षात्मक अध्ययन–कुमारी रीमा 1355

जग लाल चौधरी : एक संक्षिप्त परिचय–डॉ० नमिता कुमारी 1358

बौद्ध धर्म और प्राचीन भारतीय महिलाएं–डॉ० उमा पिथौरा 1360

राष्ट्रवाद और सामान्य जातीय या रक्त संबंध: एक विवेचन–डॉ० कुमार रंजीत 1363

श्रमिक आंदोलन के विभिन्न आयाम–डॉ० सत्येन्द्र कुमार श्रीवास्तव 1368

सातवाहनों का काल एवं प्रायद्वीप में राज्य निर्माण–श्रीमती अंजू कुमारी 1373

भारत में क्षेत्रवाद की राजनीति: एक मूल्यांकन–डॉ० सीता कुमारी 1377

समायोजन–सोनल कुमारी 1384

पर्यावरण को बचाने की कवायद–नरेन्द्र कुमार शर्मा 1389

जैन दर्शन–डॉ० सुमित्रा कुमारी 1394

भारत में किसान आन्दोलन का इतिहास–बिन्नी कुमारी 1398

भगवद्गीता में निहित दर्शन–डॉ० प्रमोद कुमार सिंह 1402

दलीय व्यवस्था के सिद्धांत–चंद्र विजय प्रकाश यादव 1406

अधीतकालीन अर्थ संयोजन (ई.पू. 600–ई.पू. 200 तक)–संतोष कुमार शर्मा 1411

फ्रायड और टैगोर की कामदृष्टि: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण–डॉ० रूमा कुमारी सिन्हा 1419

मुगल साम्राज्य का पतन और मुहम्मदशाह–डॉ० मनोज सिंह यादव 1423

ऋणग्रस्तता की समस्या का आदिवासी जीवन पर प्रभाव और हिन्दी उपन्यास–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 1429

द्वितीय नगरीकरण के व्यवहारिक पक्ष (6ठीं शताब्दी ई0पू0)–कुलभूषण श्रीवास्तव 1435

व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन–प्रज्ञा सिंह 1439

कथाकार अमरकांत के उपन्यासों में मध्यवर्ग का जीवन संघर्ष–संतोष कुमार 1443

भारत में महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा–सुबोध कुमार 1447

भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में दंड की भूमिका–त्रिकालज्ञ तिवारी 1451

मूल्यांकन-गुणवत्ता उन्नयन का सबल साधन–डॉ० अनिल कुमार पाण्डेय 1454

भारतीय इतिहास में नन्द राजवंश: एक व्यावहारिक पक्ष–विजय कुमार; विजय कुमार 1458

सत्याग्रह: एक अध्ययन–दीक्षा 1461

संस्कृत रूपकों में प्रहसन की विवेचना (प्रासंगिकता)–डॉ० श्रीमती अर्चना 1465

ग्रामीण समाज में जातियों के सामाजिक सांस्कृतिक सम्बन्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन –प्रियंका दीक्षित; डॉ. राकेश प्रताप सिंह 1468

प्राचीन भारतीय मुद्रा परम्परा में स्कन्द-कार्त्तिकेय–डॉ० अर्चना मिश्रा 1473

प्रशासकीय संगठन एवं कार्य संस्कृति–डॉ० दीपशिखा चतुर्वेदी 1478

सतत व्यापक मूल्यांकन पर एक झलक–शेर सिंह; डॉ० संजय कुमार 1481

बाल मुकुन्द गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय-भावना–डॉ० आर०पी० वर्मा 1486

भारतीय इतिहास में सबाल्टर्नवादी विचारधारा–डॉ० आशा रानी 1491

छत्तीस वर्ष और स्वयं प्रकाश: एक विवेचन–डॉ० रश्मि कुमारी 1498

हिन्दी उपन्यासों में भूमंडलीकरण का युवाओं पर प्रभाव एवं परिणाम–सरिता भारती 1504

मध्यकालीन उर्दू-साहित्य–डॉ० रियाजुल हसन 1508

प्रयोजनमूलक हिन्दी : अवधारणा एवं वर्गीकरण–डॉ० सुधा 1511

सूफी मत का निर्गुणियाँ संतों पर प्रभाव–डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी 1515

भारतीय राजनीति में क्षेत्रवाद: एक विश्लेषण–डॉ० अरविन्द कुमार वर्मा 1519

भारतीय संविधान सभा: समीक्षात्मक अध्ययन–चन्द्रभान 1524

बालिका कुपोषण: परिवार कुपोषण का काल चक्र–डॉ० दीप्ति खरे 1532

डॉ० रामकुमार वर्मा के काव्य में भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता–डॉ० प्रभुसेन 1537

रामायण में ऋतुचर्या वर्णन–डॉ० प्रेरणा माथुर 1542

कबीर की वाणी में राष्ट्रीय-सामाजिक भावैक्य का दिग्दर्शन–डॉ० मनोज कुमार पाण्डेय 1550

महजर की घोषणा एवं महत्व–डॉ. सुशील कुमार सिंह; शक्ति सिंह 1554

प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर छात्राओं के ड्रॉपआउट में परिवार की भूमिका–रश्मि सिंह 1558

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के उपन्यास 'नदी के द्वीप' में नारी पात्र 'रेखा' का चरित्र चित्रण –डॉ० नीलम तिवारी 1566

भारत में लैंगिक भेदभाव एवं महिला उत्पीड़न–डॉ० अंजू सिंह 1569

कृषि आय: आयकर अधिनियम-1961 के संदर्भ में–जितेन्द्र कुमार 1572

प्रगतिवादी कविता में नये बिम्ब–डॉ० (श्रीमती) प्रभा सिंह 1577

नेहरूवादी आर्थिक विचाराधारा और वर्तमान भारत–डॉ० किरन सिंह 1584

अवधी एवं भोजपुरी लोकनाट्यों का शिल्प सौन्दर्य–अनुपम यादव 1588

मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में यथार्थ बोध और स्त्री की स्थिति–डॉ० नम्रता जैन 1593

महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता –रत्नेश कुमार जैन 1598

ग्रामीण विकास में कृषि की भूमिका एवं चुनौतियाँ–डॉ० रमाकान्त ठाकुर–डॉ० वीरेन्द्र सिंह 1604

कानपुर में चर्म उद्योग का विकास–डॉ० प्रीती त्रिवेदी 1609

भारत में संस्कृतिकरण व ग्रामीण परिवर्तन: एक दृष्टि–डॉ० राजेश कुमार 1613

रमेश रंजक के गीतो का कलापक्ष–डॉ० राम सेवक 1617

दूधनाथ सिंह कृत 'निष्कासन' उपन्यास में दलित स्त्री चेतना–डॉ० निकेता; दीक्षित कुमार 1620

दूधनाथ सिंह कृत 'निष्कासन' उपन्यास में दलित स्त्री चेतना

डॉ० निकेता

एसोसिएट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर, उ०प्र०

दीक्षित कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर, उ०प्र०

शोध सार : दूधनाथ सिंह जी का पहला उपन्यास ष्निष्कासनष् सन् 2002 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास एक लम्बी कहानी के साथ आगे बढता है। इस उपन्यास में एक गरीब तथा दलित वर्ग की लड़की को उच्च शिक्षा लेते वक्त कौन-कौन से शारीरिक व मानसिक आघात झेलने पडते है। इसका ज्वलंत एव जीवंत चित्र इस उपन्यास में प्रस्तुत है, इस उपन्यास की कथा में राजनीतिक यथार्थ, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, सामाजिक यथार्थ साफ देखे जा सकते है। इस उपन्यास में दलित व स्त्री की कठिनाइयों को पाठको तक पहुँचाना मुख्य उद्देश्य रहा है। इसके अतिरिक्त आर्थिकता, जातीयता, भ्रष्टाचार तथा आत्महत्या जैसी भयावह समस्याओं से भी परिचित कराया है। इस शोध पत्र में 'निष्कासन' उपन्यास में दलित स्त्रियों के शोषण और संघर्ष को दिखाने का प्रयास किया गया है।

दूधनाथ सिंह समकालीन हिन्दी कथा साहित्य के एक प्रमुख जनपक्षधरता का परिचय देते है। इन्होनें 'निष्कासन' उपन्यास में प्रमुख घटनाओं का निर्भीकता के साथ वर्णन करके इस उपन्यास को रूचिकर व जीवंत बनाया, दूधनाथ जी ने इस लघु उपन्यास में शिक्षण संस्थानों में व्याप्त जातिगत भेदभाव तथा सवर्ण समाज की रूढिगत मानसिकता का पर्दाफाश किया है। लोकतान्त्रिक देश में एक दलित लडकी का न्याय के लिए दर-दर भटकना समाज और व्यवस्था को प्रश्नों के कटघरे में खड़ा कर देता है। लेखक ने शैक्षणिक परिसर में हो रहे दलित स्त्री के शोषण और भेदभाव का पर्दाफाश किया है। दूधनाथ सिंह ने दलित को स्त्री से जोडा है। दलित और वह भी स्त्री हो तो उसकी यातना और भी बढ जाती है। वर्तमान समय भी जाति व्यवस्था में डूबा हुआ है। आज भी जातिगत भेदभाव सरकारी कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों आदि में साफ देखा जा सकता है। आज भी सवर्ण समाज दलित को उच्च शिक्षा से वंचित रखना चाहते है। इस उपन्यास में शिक्षण संस्थान में जातिगत भेदभाव के साथ-साथ तमाम राजनैतिक पार्टियाँ, न्यायालय, मीडिया और भ्रष्ट सत्ता व्यवस्था की पोल खोलकर रख दी है। इस निष्कासन उपन्यास में दलित स्त्रियों पर हो रहे शोषण और उसके संघर्ष को दिखाने का प्रयास किया है।

भारतीय साहित्य में दलित साहित्य और स्त्री साहित्य सिर्फ आधुनिक काल में ही नहीं वरन् भारतीय साहित्य के आरम्भ से ही जीवन के इन पक्षों की अभिव्यक्ति होती रही है। संस्कृत के आदि कवि वाल्मीकि को दलित जीवन का अनुभव प्राप्त था मध्यकालीन संत व भक्त कवि कबीरदास, रविदास, तुकाराम, नामदेव आदि भी दलित जीवन की पीड़ाओं से परिचित थे। दलित और नारी जीवन पर केन्द्रित साहित्य ही सामाजिक समूहों के उत्पीडन की स्थिति को दर्शता है। स्त्री का उत्पीड़न वर्गगत सन्दर्भ में होता है और लिंग के आधार पर भी।

दलित चेतना ही अलगाववाद की जगह समता, एकता और भाईचारे का समर्थन करती है। आर्थिक क्षेत्र में पूँजीवाद का विरोध करती है। दलित चेतना अधिनायकवाद, सामंतवाद, ब्राह्मणवाद को मानव विरोधी मानती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित चेतना के सन्दर्भ में लिखते है, ''उसे अधिकार, अवसर और सत्ता में भागीदारी चाहिए।''[1]

दलितों का उत्पीड़न वर्गगत स्तर पर भी है और जाति के आधार पर भी। दलित स्त्री के उत्पीडन के ढंग व तौर तरीके भिन्न हो सकते है। दलित स्त्री का उत्पीडन, वर्ग, जाति व लिंग तीनों स्तर पर होता आ रहा है। दलित एवं स्त्री दोनों उत्पीडित है। दलित स्त्री और उच्च वर्गीय नारी लिंग भेद के आधार पर समान रूप से उत्पीडित होते है। उनकी सामाजिक संरचनाएँ दलितों द्वारा ही दलितों के उत्पीडन की स्थितियाँ भी पैदा करती है।

गुजराती कवि जयंत परमार दलित चेतना के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते है कि ''अम्बेडकर दर्शन ने दलित कवियों के मन में आत्मसम्मान जागृत किया उसके फलस्वरूप जीवन अनुभव को देखने और पहचानने की उनकी भूमिका विद्रोह तथा नकार से भर उठी। उसका आवेग किसी तूफान की तरह है उसका सौन्दर्य उसकी सामर्थ्य उसकी वेदना में है।''[2]

हिन्दी कथा साहित्य में भी दलित जीवन को केन्द्र में रखकर अनेक रचनाएँ रची गयी है। प्रेमचंद की सद्गति, ठाकुर का कुआँ, कफन आदि कहानियों में दलित जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति है।

आज का दलित साहित्य भारतीय साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाये हुआ है। ''जिस साहित्य में मनुष्य समाज की पीड़ा दर्द और उनकी कुछ न कर पाने की बेबसी का चित्रण मिलता है, वह सब दलित साहित्य है।''[3]

'निष्कासन' उपन्यास दलित स्त्री के दर्द को बयाँ करता है। संघर्ष और लोकतन्त्र की मर्यादा को शर्मसार करता यह उपन्यास भारतीय कार्यपालिका, न्यायपालिका पर सवाल खड़ा कर देता है। लड़की जो एक नये विश्वास के साथ आगे पढने के लिए बी0ए0 प्रथम श्रेणी से पास करती है परन्तु स्नातकोत्तर शिक्षा से वंछित हो जाती है। यह उपन्यास दलित स्त्री की चेतना को स्वर्ण व ब्राह्मणवाद विरोधी बना देता है। इस उपन्यास में लेखक ने इस स्वर्णवादी समाज की क्रूर मानसिकता की घोर भर्त्सना की है। लेखक द्वारा ब्राह्मणी व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए लिखते है कि, ''यह भारतीय ब्राह्मणी संस्कृति का असर है जो चुपके-चुपके वध करती है और उसके लिए एक खूबसूरत मंच और सही अभिनेता और विचारों की धुँधली रोशनी और तार्किक कुतर्क का संसार रचती है।''[4]

निष्कासन उपन्यास में विश्वविद्यालय के माहौल को दर्शाया गया है जोकि इतना बिगड़ चुका है कि यहाँ पर कोई भी दलित स्त्री अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करती है। युनिवर्सिटी की हॉस्टल वार्डन जिसका नाम उपन्यास में मैम रखा है वह भी अपने अधिकारों का गलत प्रयोग करती नजर आती है। इस उपन्यास में सामाजिक यथार्थ के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। जहाँ लोकतंत्र सबको समान अधिकार प्रदान करता है वही उसको लोकतन्त्र को मारने का अधिकार भी दिया हुआ है। कुछ भ्रष्ट सरकारी तंत्र लोकतन्त्र को समाप्त करने में तुले है।

''जहाँ प्रजातन्त्र की धमक है, मानवाधिकारों की बडी चहल-पहल है, दबे-कुचले आदमी को बचाने और बढ़ाने के लिए जहाँ हर कदम पर कुकरमुत्तों की तरह अपना छोटा-बडा छाता पसारे गैर-सरकारी संगठन है, जहाँ मानवाधिकारी, अस्मिता और आत्मसम्मान की किलकती धौस के सौजन्य बिलस रहे है, ... जहाँ भारतीय स्त्री अपनी दमन की दरारों से बार-बार बाहर झाँकने के प्रयास में एक मीठी धूल फाँकती हुई नजर आती है।''[5]

वर्तमान समय में कालेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर राजनीति के व्यापक प्रसार ने इन संस्थाओं से इनके गौरवान्वित रूप को छीन लिया है। माँ-बाप तो बच्चों को यूनिवर्सिटी तक भेजने में हिचकते है। आज भी विश्वविद्यालय प्रशासन का सम्बन्ध गुण्डों और अपराधियों से है। इन लोकल गुण्डों को राजनैतिक आश्रय प्राप्त है। इसी आश्रय की छाया में गुण्डें छात्रों के साथ मनमाना व्यवहार करते है। 'निष्कासन' में यह स्पष्ट देखा जा सकता है। लडकी का किस तरह सत्ता के द्वारा ही उत्पीडन होता हैं। चाहे कोई भी पार्टी हो साम्यवादी, प्रगतिवादी या ब्राह्मणवादीय गुण्डे हर पार्टी में है।

आज यही सोच लोकतन्त्र के लिए खतरे की घण्टी साबित हो रही है। लड़की की बडी बहन मानसिक उत्पीडन व शारीरिक प्रताडना को झेलकर गोपेश्वर विवि0 में प्राध्यापक बन गई है, वही दलित लडकी, इस मानसिक व शारीरिक उत्पीडन को बर्दाश्त नहीं करती और उसके खिलाफ आवाज उठाती है।

'निष्कासन उपन्यास में लड़की यह दलित चेतना जाग्रत करती है कि अन्याय के प्रति अपनी आवाज उठाओय चाहे साथ में कोई हो या न हो। आज वर्तमान समय में भी दलित उत्पीडन प्रत्येक कार्यालय विश्वविद्यालय कॉलेज में देखने को मिल जाता है।

'कोई दलित-उत्पीडन नहीं हो रहा।' मुख्यमंत्री जी हँसकर प्रेस वालों से कहते है।

और पाँच दलितों पर जो तेजाब फेंका गया सर?'

सब ठंडा हो जायेगा। मुख्यमंत्री जी जवाब में कहते है।[6]

दलित स्त्री के लिए न्याय जैसे बना ही नहीं है। निष्कासन में महामहिम मुख्यमंत्री, प्रशासन, कर्मचारी, गुरूजन सभी पार्टियाँ लड़की को न्याय नहीं दिला पाये। सभी पार्टियों के लोग वोट बैंक के लिए दलितों का प्रयोग करते है।

''मैं कहता हूँ इस उर्वर प्रदेश में आपको इसलिए भेजा गया कि हमारे वोट बैंक में जमा-पूँजी तेजी से बढ़े। इसीलिए कि आप आये तो दलितों में यह संदेश जायेगा कि हम सभी सवर्णो के नेता नहीं है और कहाँ है? है क्या?''[7]

साहित्य समाज से जुडा हुआ है। जो समाज में हो रहा है वह साहित्य में लिखा जाना अनिवार्य है। निष्कासन में समाज के नग्न यथार्थ को देखा जा सकता है। दूधनाथ सिंह दलित समाज से नहीं आते है फिर भी ष्निष्कासनष् में उन्हीं दलित समाज की पीड़ा को अनुभूत किया है। दूधनाथ सिंह प्रगति सोच के उपन्यासकार रहे है। निष्कासन के आरम्भ में प्रेमचन्द की पँक्ति लिखी है:-

''......जो कुछ असुन्दर है, अभद्र है, मनुष्यता से रहित है, वह उसके लिए (साहित्यकार के लिए) असह्य हो जाता है। उस पर वह शब्दों और भावों की सारी शक्ति से वार करता है।...... जो दलित है, पीडिघ्त है, वंचित है- चाहे वह व्यक्ति हो या समूह उसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है।''[8]

'निष्कासन' के संबंध में दूधनाथ सिंह कहते है कि ''यह कोई जरूरी नहीं है। यहाँ आत्मवध एक नैतिक प्रतिशोध है। यह कथा के अन्तरंग से निकलने वाली एक ऐसी निष्पत्ति है जिसका कोई और विकल्प नहीं। सारे आत्मघात; कायर निर्णय नहीं होते। अधि कांशत: वे इस समाज से एक जलता हुआ प्रतिशोध है। सारी लड़ाई लड़ चुकने और पस्त हो जाने के बाद आत्मवध एक पॉजिटिव तर्क है, जिसे लोग नहीं समझते। मेधा पाटकर ने एक बार जल-समाधि लेने का निर्णय लिया था, क्यों? सत्ता की शक्ति हमें थका सकती है, पराजित कर सकती है।''[9]

ब्राह्मणवादी व्यवस्था इस तरह फँसी हुई है कि उसे आत्महत्या करने पर विवश कर देती है। यद्यपि दलित लडकी पढने में होनहार थी, प्रथम श्रेणी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी फिर भी छात्रावास में रहने के लिए दस हजार रूपये मांगे जाते है और न देने पर कुछ और दो की मांग की जाती है, यह कहना गलत न होगा कि वर्तमान समय की शिक्षण व्यवस्था दुराचार और भद्दी सोच का अडड्ा बन गया है।

हमारे समाज को जातिवाद-वर्णवाद से बाहर आकर इस लड़ाई को गरीबी और अमीरी की लडाई में परिवर्तित करना होगा। दूसरा कोई भी रास्ता कारगर नहीं है। उससे प्रजातन्त्र और विकलांग होता चला जायेगा।[10]

जातिवाद भी एक तरह की साम्प्रदायिकता है। लोगो की समझ में अभी नहीं आया, शायद आगे आये।[11]

दलित के प्रति हमारा भारतीय समाज हमेशा सदियों से ही उदासीन रहा है। उसे उत्पीडित किया जाता है और एक पशु जैसा आचरण उसके साथ किया जाता है। दलित स्त्री की बात करें तो यह यातना दोहरी हो जाती है।

हिन्दी साहित्य में दलित स्त्री की पीड़ा पर आत्मकथा उपन्यास कहानी लिखी गई है। शिकंजे का दर्द में सुशीला टाकभौरे लिखती है ''एक तो नारी होने की अपने आपमें पूर्ण व्यथा की कथा है वहीं दूसरी ओर श्रम-संघर्ष, कष्ट और गरीबी से भी अधिक यातनापूर्ण है, अछूत होना, अस्पृश्य माना जाना, निर्बल, असहाय, चुपचाप, अपमान के साथ जीना, भुक्तभोगी ही इस यातना को समझ सकते है।''[12]

इस उपन्यास में स्वर्णवाद समाज का नग्न यथार्थ दिखाया है। बडे छोटे की लडाई में विश्वविद्यालय से निकलवाने के बाद भी उसे परेशान किया जाता है। उसे मानसिक रूप से परेशान किया जाता है। उसे आत्महत्या के लिए मजबूर किया जाता है। यह उपन्यास स्वर्णवादी व्यवस्था तथा विश्वविद्यालय परिसर के यथार्थ को बेनकाब करता है। छात्रावास की मैडम ने एम0एम0 ने छात्रावास के नियमों को अपने हाथों में लिया हुआ है। जहाँ प्रतिदिन मेहमान के आने पर दलित लड़की से संबंध बनाने को मजबूर किया जाता है।

''हॉस्टल में तो यह आम रिवाज है। शाम को कोई-न-कोई लडकी मैम की सेवा-टहल या उनके मेहमानों के स्वागत-सत्कार हेतु बुलाई ही जाती है और ऐसी संवासिनियों की गिनती सौभाग्यशालिनी लडकियों में की जाती है।''[13]

इसी स्वागत-सत्कार के लिए विश्वविद्यालय में यौन तृष्णा की पूर्ति के लिये लडकी बुलायी जाती है। लडकी आत्मसम्मान बेचने से इंकार कर देती है और यही से लडकी की आत्म संघर्ष की कथा शुरू हो जाती है। यह उपन्यास तमाम सवर्ण व्यवस्था पर प्रहार करता है। इस लघु उपन्यास के माध्यम से लेखक ने समाज की व्यवस्था और सत्ता पर कडा प्रहार किया है। लडकी अपने अस्तित्व के लिए प्रजातान्त्रिक देश के हर दरवाजे तक जाती है लेकिन हर जगह उसे निराशा ही हाथ लगती है। महामहिम से लेकर अपनी जाति के नेताओं तक पहुँचने के बाद भी उसे न्याय नहीं मिलता। एक दलित स्त्री के साथ हमारा सबसे बडा लोकतान्त्रिक शब्द न्याय नहीं कर पाता है।

निष्कर्षत: यह ष्निष्कासनष् उपन्यास दलित चेतना का उपन्यास है। यह उपन्यास स्त्री चेतना से भरा हुआ है, साथ ही यह उपन्यास प्रतिशोध का भी है। वह प्रतिशोध जो आत्महत्या का प्रतिशोध हैए जो स्वर्ण ब्राह्मणवादी, प्रशासन और लोकतान्त्रिक देश से लिया गया है। इस उपन्यास को पढ़ने के बाद इससे अच्छा प्रतिशोध हो ही नहीं सकता। एक लडकी जो न्याय के लिए तरसती है जो अपनी अस्मिता को बचाने के लिए चारों स्तम्भ तक जाती है पर उसके साथ कोई भी न्याय नहीं करता। आत्महत्या एक तंज है। हमारे लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर इससे बडा कोई भी प्रतिशोध नहीं हो सकता। ष्निष्कासनष् उपन्यास दलित स्त्री के चेतना का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास हैष्य जो आने वाली पीढी को एक नया रास्ता प्रदान करने वाला और ताकतवर पर कमजोर का प्रहार हो सकता है। लड़की का यह आत्महत्या का प्रतिशोध ही दलित चेतना को उजागर करता है।

सन्दर्भ-सूची

1. हिन्दुस्तानी जबान, अप्रैल-जून, 1997, पृ0. 97
2. परमार, जयंत, हिन्दुस्तानी जबान, अप्रैल-जून, 1997, पृ0. 4
3. डा0. बैचेन, श्यौराज सिंह, चिन्तन की परम्परा और दलित साहित्य, पृ0. 193
4. सिंह, दूधनाथ, निष्कासन, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली पहली आवृति 2012 पृ0. 26
5. वही पृ0. 51
6. वही पृ0. 69
7. वही, पृ0. 70
8. वही, पृ0. 5
9. सिंह, दूधनाथ, कहासुनी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली 2021 पृ0. 89
10. वही पृ0. 106
11. वही पृ0. 109
12 टाकभौरे सुशीला, अम्बेडकरवादी स्त्री -चिन्तन, स्वराज प्रकाशन दिल्ली पृ0. 93
13. सिंह, दूधनाथ, निष्कासन,राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली पहली आवृति 2012 पृ0 42